ISSN 2395-051X

भारत- चीन संबंध- चुनौतियां एवं उभरते मुद्दे

डॉ. रजनी दुबे

प्राध्यापक - राजनीति विज्ञान

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर, उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

किसी भी राष्ट्र की सुख, समृद्धि एवं शांति व्यवस्था उसके पड़ौसी देशों के आपसी संबंधों से सबसे ज्यादा प्रभावित होती है। भारत की विदेश नीति स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व पर आधारित है, जिसका उद्देश्य अपने पड़ोसियों तथा शेष विश्व के शांतिपूर्ण संबंधों की स्थापना करना रहा है। विदेश नीति का मूलभूत सिद्धांत सामाजिक आर्थिक विकास एवं राजनीतिक स्थिरता जैसे राष्ट्रीय हितों को प्रोत्साहित करना राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा करना, विभिन्न देशों के बीच शांति, मित्रता सद्इच्छा एवं सहयोग को बढ़ावा देना शस्त्रीकरण का विरोध करना एवं निशस्त्रीकरण का समर्थन करना, मानवाधिकारों का सम्मान करना तथा पंचशील एवं गुटनिरपेक्ष सिद्धांतों को प्रोत्साहित करना रहा है।

मुख्य शब्द - भारत-चीन संबंध, ऋणजाल, शोषणकारी अर्थव्यवस्था।

दोनों देशों के मध्य प्राचीनकाल से सांस्कृतिक एवं व्यापारिक सम्बन्ध रहें हैं। परन्तु सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद से दोनों देशों के बीच सीमा विवाद सदैव तनाव का कारण बना रहा जिसके फलस्वरूप सीमा पर आपसी सैन्य टकराव होते रहें हैं। भारत एवं चीन के आपसी सम्बन्ध प्रतिस्पर्धात्मक रहा है। चीन के द्वारा भारत के समक्ष नित नवीन समस्याओं को उत्पन्न किया जाता रहा है जो भारत की राष्ट्रीय एकता, सम्प्रभुता और क्षेत्रिय अखण्डता के लिए खतरा है। भारत-चीन के मध्य एल ए सी (वास्तविक नियत्रंण रेखा) सीमा रेखा है जिसकी कुल लम्बाई 3,488 किमी. है। वास्तविक नियत्रंण रेखा भारतीय राज्य जम्मू-कश्मीर, हिमांचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम और अरूणांचल प्रदेश से होकर गुजरती है। यह सीमा रेखा तीन क्षेत्रों में बटी हुई है- जिसमें पूर्वी क्षेत्र (अरूणंचल प्रदेश और सिक्किम) मध्य क्षेत्र (हिमांचल प्रदेश एवं उत्तराखण्ड) और पश्चिमी क्षेत्र (जम्मू-कश्मीर) है। वर्ष 1914 में ब्रिटिश भारत के तत्कालीन विदेश सचिव सर हेनरी मैकमोहन द्वारा ब्रिटिश इंडिया और तिब्बत सरकार के प्रतिनिधियों के बीच शिमला समझौता किया गया जिसमें दोनों देशों के मध्य सीमा का निर्धारण किया गया और 890 किमी0 लम्बी सीमा रेखा खींची गयी जिसे मैकमोहन रेखा कहा गया था। इसमें तवांग (अरूणांचल प्रदेश) को ब्रिटिश भारत का हिस्सा माना गया था। वर्ष 1950 में चीन ने तिब्बत पर आक्रमण करके उस पर अपना कब्जा कर लिया और मैकमोहन रेखा को मानने से इनकार कर

दिया जो 1962 में भारत-चीन का कारण बना। हालांकि दोनों देश यथास्थिति बनाये रखने के लिए एल ए सी (वास्तविक नियत्रंण रेखा) का इस्तेमाल करते हैं।

एल ए सी पर कई हिमनद, बर्फ के रेगिस्तान, पहाड़ और नदियाँ पड़ते हैं। सीमा के साथ लगने वाले कई ऐसे स्थान हैं जहाँ से अक्सर भारत और चीन के सैनिकों के बीच तनाव की खबरे आती रहती है। इन विवादों की वजह से दोनों देशों के बीच कभी सीमा का निर्धारण नहीं हो सका। हालांकि सीमांकन के लिए दोनों देशों के द्वारा प्रयास किये गए थे। लेकिन सीमा से सटे कई इलाकों को लेकर दोनों देशों में आम सहमति न बन पाने के कारण सभी प्रयास निरर्थक सिद्ध हुए। और सीमा विवाद आज भी ज्यों का त्यों बना हुआ है।

आज चीन हिन्दमहासागर के तटीय राष्ट्रों को आर्थिक सहायता देकर उन्हें अपने कर्ज के जाल में फँसाकर हिन्दमहासागर में अपना वर्चस्व बढ़ा रहा है जो भारतीय सुरक्षा के समक्ष गम्भीर चुनौती है। एक तरफ चीन भारत के समक्ष सीमा सम्बन्धी विवाद खड़ा कर रहा है तो वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान को उन्नत हथियारों की आपूर्ति कराकर पाक प्रायोजित आंतकवाद को बढ़ावा दे रहा है। भारत-चीन सीमा पर हाल की कुछ घटनाक्रमों ने भारत को चीन के सामरिक परिप्रेक्ष्य में सोचने के लिए बाध्य कर दिया है। जिसमें चीनी सैनिकों का दौलत बेग ओल्डी में टेन्ट लगाना, डोकलाम में सड़क बनाना, अरूणांचल प्रदेश में सोने की खनन करना तथा इस क्षेत्र के 15 गाँवों का नाम बदलकर चीनी भाषा में रखना एवं गलवान घाटी की घटना प्रमुख है जो भारतीय सुरक्षा के समक्ष खुली चुनौती है। पिछले कुछ दशकों से चीन की विस्तारवादी नीतियाँ भारतीय सम्प्रभुता के विरूद्ध रही हैं जिसमें से सीमा विवाद, बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा, मोतियों की माला, ऋणजाल कुटनीति इत्यादि प्रमुख है।

मोतियों की माला - चीन अपनी विस्तारवादी महत्वाकांक्षी नीति को अमलीजामा पहनाने के लिए 'मोतियों की माला' नीति का शुभारम्भ किया। इसका उद्देश्य विश्व में अपना वर्चस्व कायम करना और अपने उद्योगो के लिए अकूत संसाधनों के इंतजाम करना था। हांलाकि String of Pearls (मोतियों की माला) का जिक्र 2005 में पेंटागन ने 'एशिया में ऊर्जा का भविष्य' नाम की एक खुफिया रिपोर्ट में किया था। पेंटागन की इस रिपोर्ट में चीन द्वारा समुद्र में तैयार किये जा रहे मोतियों की माला का विस्तृत विवरण दिया गया था। यह दक्षिण चीन सागर से लेकर मलक्का जलसंधि, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर से होते हुए अरब सागर तक सामरिक ठिकाने जिसमें बंदरगाह, हवाई पट्टी, निगरानी तंत्रा इत्यादि तैयार करना था। ध्यातव्य है कि 'मोतियों की माला' चीन की वह विस्तारवादी नीति है जिसके अंतर्गत चीन भारत के विभिन्न पड़ोसी देशों में रणनीतिक कारणों से आधार बना रहा है जिन्हें वह भारत के खिलाफ युद्ध जैसी स्थिति होने पर प्रयोग कर सकता है। चीन की इच्छा हमेशा से हिंद महासागर में रणनीतिक तौर से प्रभाव स्थापित करने की रही है। ग्वादर, हम्बनटोटा, सिटवे और जिवूती का बंदरगाह चीन के इसी इच्छा का हिस्सा है जिसके द्वारा वह हिंदमहासागर में अपने प्रभाव को बढ़ाना चाहता है। चीन पाकिस्तान, म्यांमार, मालदीव और श्रीलंका में भारी निवेश करके अपना वर्चस्व बढ़ा रहा है जो भारतीय सुरक्षा के चिंता का विषय बना है।

ऋणजाल कूटनीति - ऋणजाल कूटनीति (Debt-trap Diplomacy) शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम ब्रह्मा चेलानी द्वारा 2017 में किया गया था। ऋणजाल कूटनीति का सिद्धान्त यह है कि लेनदार (Creditor) देश जानबूझकर

एक देनदार (Debtor) देश को जरूरत से ज्यादा कर्ज देता है, जिसको देनदार देश कर्ज में फंसा जाता है। यह देनदार देश से आर्थिक या राजनीतिक रियायतें लेने के इरादे से किया जाता है जब वह अपने ऋण चुकौती दायित्वों को पूरा करने में असमर्थ हो जाता है। ऋण की शर्तों को अक्सर सार्वजनिक नहीं किया जाता है। ऋणजाल कूटनीतिक सिद्धान्त के समर्थकों ने दावा किया है कि चीन के भू-रणनीतिक हितों की पूर्ति तब तक होती है जब तक उसके साथी कर्ज से जूझते हैं। एशिया, अफ्रिका एवं यूरोप के कुछ छोटे एवं गरीब देश चीन के कर्जदार है। इन देशों की जीडीपी का अधिकांश हिस्सा चीन द्वारा लिए गए कर्ज को चुकाने में चला जाता है। चीन उन्ही देशों को कर्ज देता है जो बहुत गरीब हैं। और चीन के कर्ज को चुकाने की निर्धारित समय सीमा से भी ज्यादा समय लगे जिसके कारण चीन उस देश के किसी हिस्से पर कब्जा करके उसका इस्तेमाल कर सके। चीन भारत के पड़ोसी देशों में भी अपने इसी कुटनीति का इस्तेमाल करके अपना वर्चस्व बढ़ा रहा है। जिससे भारत पर से इनकी निर्भरता को कम किया जा सके और इन देशों में अपनी कठपुतली सरकार बैठाकर अपने हित को साध सके।

चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा - चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा का औपचारिक रूप से शुरूआत चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग द्वारा 2015 में की गयी थी। यह शी की महात्वाकांक्षी वन बेल्ट वन रोड परियोजना का एक हिस्सा है। यह गलियारा पाक अधिकृत जम्मू-कश्मीर (गिलगिट-बाल्टिस्तान और पाक द्वारा तथाकथित आजाद कश्मीर) से होकर गुजर रहा है। यह स्पष्ट तौर पर भारत की सम्प्रभुता का उल्लंघन करता है। पाक अधिकृत जम्मू-कश्मीर भारत और पाकिस्तान के मध्य एक विवादित क्षेत्र है। इस क्षेत्र पर पाकिस्तान का 1947 से गैर कब्जा है। जिस पर भारत दावा करता है। चीन इस क्षेत्र में सड़क, बाँध, खनन और अन्य बुनियादी विकास के लिए अरबों डालर निवेश किया है ताकि इस क्षेत्र में अपनी पकड़ मजबूत कर सके। चीन का पाक अधिकृत कश्मीर में काम करना कश्मीर मुद्दे में चीन को भी एक हिस्सा बना देता है। भारत चाहता है कि यह मुद्दा द्विपक्षात्मक बना रहे। पाकिस्तान ने इस क्षेत्र का एक हिस्सा शाग्साम घाटी (5180 वर्ग किमी. क्षेत्रापफल) को 1963 में चीन को दे दिया था माना जाता है कि तब से चीन का दखल इस क्षेत्र में काफी बढ़ गया है जिसका उदाहरण कराकोरम राजमार्ग है। जिसके द्वारा चीन की गेम चेंजर परियोजना चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा पूरा हो सका। चीन अपने इस परियोजना के माध्यम से भारत की पश्चिमी सीमा के नजदीक पहुँच गया है। इसके अलावा पाकिस्तान के ग्वादर एवं करांची पोर्ट के द्वारा अरब सागर में अपनी उपस्थिति दर्ज कर दी है। चीन का यह विस्तार भारतीय सुरक्षा के लिए किसी खतरे की घंटी से कम नहीं है।

बेल्ट एण्ड रोड एनिशिएटिव - यह चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है। जिसकी घोषणा 2013 में कजाकिस्तान में की गयी थी। यह वन बेल्ट वन रोड परियोजना का संक्षिप्त रूप है। यहाँ बेल्ट का अर्थ है भू-आधारित ढांचागत परियोजना और रोड का अर्थ है समुद्र आधारित ढांचागत परियोजना है। इसके माध्यम से चीन द्वारा सम्बन्धित देशों में रेल, सड़क, बंदरगाह इत्यादि का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है। दरअसल यह परियोजना चीन के पिछली विस्तारवादी नीतियों, मोतियों की माला, ऋणजाल तथा अन्य आर्थिक गलियारों का एक समेकित रूप ही है। 21वीं सदी में शायद चीन भी अपने बेल्ट एण्ड रोड पहल के जरिये ब्रिटिश साम्राज्य के नक्शेकदम पर चलना चाह रहा है। यदि चीन का चरित्र उपनिवेशवादी

हुआ तो यह एक अधिक शोषणकारी अर्थव्यवस्था का जनक साबित होगा। यह चीन की महत्वाकांक्षी आर्थिक एवं भू-रानीतिक एजेंडा हैं जिसके माध्यम से चीन ना सिर्फ अपनी भू-राजनीतिक पहुँच बढ़ाना चाहता है। बल्कि विश्व के बाजारों को अपने उत्पादों से पाटना भी चाहता है। भारत के पड़ोसी देश में नेपाल, भूटान, पाकिस्तान, बांग्लादेश, म्यांमार, श्रीलंका और मालदीव चीन से किसी न किसी रूप में भारी कर्ज लिए हुए हैं। जिसके कारण इनको अपने देश की सम्प्रभुता को चीन के पास गिरवी के रूप में रखनी पड़ी है। परिणामस्वरूप चीन इन देशों में बड़ी तेजी से अपनी रणनीतिक पैठ जमा रहा है जो भारतीय सुरक्षा के लिए एक नकारात्मक दूरगामी परिणाम हो सकते हैं।

पिछले कुछ वर्षो से भारत ने हिंदमहासागर में अपनी सैन्य सक्रियता बहुत तेजी से बढ़ा दी है। मई 2018 से चीनी जहाजों पर नजर के लिए अंडमान-निकोबार में युद्धक विमान किए गए हैं। भारत 2016 से अपने नौसेनिक जहाजो के लिए हिंदमहासागर में अमेरिकी नौसैनिक अड्डे डियागो गार्सिया और 2018 से ओमान के दुक्म बंदरगाह और वायुसैनिक अड्डे का उपयोग कर रहा है। भारत को अपनी सीमा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। भारत को अपने पड़ोसी देशों के साथ आपसी सम्चन्धों को और वेहतर करने की जरूरत है। चीन को प्रतिसंतुलित करने के लिए भारत के पास बहुत से विकल्प है जिसमें हीरों का हार की स्त्राातजीय, एशिया-अफिका विकास गलियारा, अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा, इत्यादि।

सन्दर्भ -

1. Bagachi, I. (2015). चीन की 'मोतियों की माला' को भारत ने दिया झटका. नवभारत टाइम्स, https://navbharattimes.indiatimes.com/world/asian-countries/ now-india-gets-to-tug-at-chinas-string-of pearls / articleshow / 47572877. cmsaccess date on 22 jan,2018.
2. Bansal, A. (2021). चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा बनाने के पीछे जानें क्या है ड्रैगन का मकसद. India.com, https://www,india.com/hindi- news/special-hindi/what-is&-he-motive-of-china-behind-building-the-economic-corridor-4310271/ amp/accessdateon22jan,2022.
3. Kumar, S. (2018). चीन का श्रीलंका में बढ़ता कर्जजाल OBSERVER RESEARCH FOUNDATION, https://www.orfonline.org/hindi/research/china-sri-lanka-debt-trap//amp access date on 15 feb, 2019.
4. Singh, H. (2017). चीन का 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स प्रोजेक्ट' भारत की सुरक्षा को कैसे प्रभावित करेगा?. Jagaran Josh, https://m.jagranjosh.com/general-knowledge/amp /how-chinas-string-of-pearls-project-would -affect-indias-security-in-hindi-1500888 770-2 acces date on 28 April, 2019.
5. Singh, RP.(2018)- दुनिया भर को चिंतित करता चीन. दैनिक जागरण,
6. कर्ज-जाल कूटनीति https://www.hmoob.in/wiki/Debt-